सीबीआई के बाद आरबीआई में भी कोलाहल के बीच पड़ताल

खाक संवैधानिक हैं हमारे वर्तमान और भविष्य के प्रशासक.....

ग्राउंड जीरो से विवेक की विशेष रिपोर्ट

सीबीआई बनाम सीबीआई का घमासान 'अच्छे दिनों' में भारत ने देख लिया। अब आरबीआई बनाम सरकार के घमासान की प्रस्तुति जारी है। मजेदार बात ये है कि इस परिदृश्य में मोदी पक्ष के उलट जो भी है उस पर अमित शाह के डिजिटल प्यादे सरकार के खिलाफ साजिश में शामिल होने का आरोप भी लगा रहे हैं। जबकि जो अधिकारी आज मोदी की मनमानी से भिड़ रहे हैं वो सभी मोदी-अमित शाह जोड़ी की कृपा मिलने पर ही पद पर आसीन हुए थे।

लोकतंत्र अपनी संस्थाओं से चलता है और संस्थाओं को चलाने का जिम्मा प्रशासकों पर होता है। तो किस प्रकार के प्रशासक लोक सेवा में आते हैं इसकी पड़ताल के लिए हमने उत्तर प्रदेश प्रशासनिक सेवा की भर्ती परीक्षा दे रहे अभ्यर्थियों से पड़ताल करना उचित समझा।

इसी 28 अक्टूबर को हुई प्रारंभिक परीक्षा के आगरा सेंटर पर मजदूर मोर्चा की ग्राउंड जीरो टीम ने पंजाब मेल से जाने का निर्णय लिया। सुबह इस ट्रेन में बैठते ही अखबारों के पन्ने पलटते मुसाफिर सीबीआई की खबर बड़े चाव से पढ़ रहे थे। सबका अपना अपना पक्ष था और इसी पक्ष को सही साबित करने के लिए मथुरा के 45 वर्षीय कपड़ा व्यापारी रामदास पांडे ने अखबार के पन्नों का शोर करते हुए कहा, "ये हुई ना बात, सीबीआई के चीफ तक को हड़का दिया मोदी जी ने जो कांग्रेस से मिला हुआ था"।

उनका इतना कहना भर था कि पास बैठे दिल्ली पुलिस में कार्यरत दरोगा बलवान सिंह ने दरोगाई अंदाज में धमकाते हुए बोला "अखबार पढ ले भकत, सीबीआई वाले तै फटी पड़ी है थारे मोदी की"। इन शब्दों ने कम्पार्टमेंट में बातचीत की बर्फ को ताड़ने का काम किया और देखते ही देखते लगभग 20 लोगों की एक गोष्ठी सी जम गई। दारोगा बलवान सिंह भरतपुर के रहने वाले हैं और तीन अन्य दरोगा साथियों के साथ भरतपुर अपनी बेटी की शादी की तैयारियों के लिए जा रहे थे। बोले, "सीबीआई की तो बात छोड़ दो वो अपने आप निबट लेगा वर्मा, थम ये बताओ कि किसानां पल्ले के छाडया मोदी ने? बेवकूफ बनाया करे यो बस कदे ई मित्र कडे ई मंडी।"

वहाँ बैठे एक युवक नवमीत ने जो पीसीएस की परीक्षा देने जा रहा था, बलवान सिंह से ई मित्र की समस्याओं के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि दो साल पहले ई मित्र की जानकारी देने कुछ अधिकारी और एक कंप्यूटर आपरेटर उनके गाँव आये थे। तब सब गाँव वालों को लगा कि फसल बढ़िया है, सब घर बैठे बैठे पता चल जाएगा। इसी लालच में लगभग गाँव के हर किसान ने अपनी फसल सरकार को बेचने का फैसला किया और ई मित्र, ई मंडी के जरिये अपना अपना अनाज बुक कर दिया। बुकिंग होने के बाद से आज तक अधिकाँश का अनाज नहीं गया और जिनका गया भी उनको पेमेंट होने में ही पांच पांच महीने लग रहे हैं। मुझे बेटी की शादी करनी है और दूसरे किसानों को अगली फसल की तैयारी करनी है तो इतने दिन तो पेमेंट के लिए नहीं रुक सकते। अंत में अब हार के अनाज बनिए को बेच दूंगा।

इस पर नवमीत ने कहा, अब सरकारी काम है वक्त तो लगेगा न जी? और ये क्या कम है कि आप घर बैठे ई मित्र की सहायता से खेती किसानी सबके बारे में जान लेते हैं। बलवान के साथी रामबीर गहलोत बोले, ऐसा है भई ई मित्र कोई सहायता वहायता ना करता, उल्टा पीसे लिया करे। हमारे गाम पिथोरा भरतपुर में शुरू में तो सब गए ई मित्र जैसे चक्करों में, फिर वो ई मित्र ने दूकान खोल ली कैडे की और जो मदद लेने जाए उससे 50 रुपये लिया करे। हर बार के 50 रुपये दे के भी काम कुछ न बने तो एक दिन सारे गाँव वालयां ने ई मित्र की ही पिटाई कर दी।

एक अन्य परीक्षा अभ्यर्थी ने बात को किसानी से घुमा कर अखबार के उस लेख की ओर मोड़ा जिसमें चेतन भगत ने बताया है कि कैसे भारतीय जनता मोदी से कम समय में ज्यादा अपेक्षाएं कर रही है और ये सरासर गलत है। इसी तर्ज पर बलवान सिंह और रामबीर गहलोत को भी समझना चाहिए कि इतने कम समय में मोदी जी ने जो किया वो करना अपने आप में लगभग असंभव है। मोदी सरकार जो कर रही है उसका लाभ आगे चल कर दिखेगा।

अबकी बार प्रति-मोर्चा संभाला 38 वर्षीय दिल्ली पुलिस सिपाही प्रेमपाल ने और वहाँ बैठे पीसीएस के अभ्यर्थियों से पूछा, तुम सब तो बड़े अफसर बनने जा रहे हो पर ये बताओ जो अजीत डोभाल ने आज बोला है कि देश को 10 साल तक एक मजबूत पूर्ण बहुमत की सरकार चाहिए और जो सेना प्रमुख बिपिन रावत रोज भारत की विदेशों से कैसी बातचीत होनी चाहिए वो बोलना ठीक है क्या? एक अन्य अभ्यर्थी सूरज ने कहा कि इसमें गलत क्या है? अगर इतना अनुभव रखने वाले कुछ बोल रहे हैं तो ठीक ही बोल रहे होंगे। वहीं नीलिमा चौधरी जो मथुरा सेंटर पर अपना इम्तिहान देने जा रही थी का मानना था कि अजीत डोभाल एक ईमानदार और कर्मठ अधिकारी है वरना मोदी का इतना भरोसा उनपर क्यों होता?

प्रेमपाल ने अपने सभी पुलिस साथियों को एक नजर देखने के बाद कुटिल मुस्कान के साथ सामान उठाते हुए कहा, भई इस हिसाब से तो सीबीआई वाला अस्थाना भी ईमानदार ही होगा मैडम। मुस्कान का रूपांतरण माथे की सलवटों में करते हुए प्रेमपाल ने अपना अचूक तीर मारा और कहा, भई तुम्हारा इम्तिहान तो जब होगा तब होगा पर रिजल्ट मैं अभी घोषित कर देता हूँ, जब तुम्हे संविधान की ही समझ नहीं तो तुममे से एक भी यो पेपर ना पास कर रा। इब राम राम अपना मथुरा आ लिया।

आगरा में हम प्रतापपुरा में परीक्षा सेंटर खालसा इंटर कॉलेज पहुंचे। 11.30 पर पहला टेस्ट समाप्त हुआ और सभी अभ्यर्थी दूसरे पेपर जो 2.30 बजे दोपहर से होना था की प्रतीक्षा यहाँ वहाँ बैठ कर करने लगे। कुछ अभ्यर्थियों ने बताया कि उनका पेपर बहुत अच्छा हुआ है और उनको उम्मीद है वो अगले राउंड में जा रहे हैं। इस पर अभ्यर्थी विवेक ने मजाकिया अंदाज में कहा कि जितना मर्जी अच्छा कर लो जब रिजल्ट ही नहीं आता तो क्या फायदा। पड़ताल की तो सबने बताया कि पिछली दो बार की परीक्षाओं के फाइनल रिजल्ट आज तक घोषित नहीं हुए हैं और अब ये तीसरी परीक्षा का प्री टेस्ट भी ले लिया योगी जी ने।

प्रशासनिक सवालों के जवाब में लगभग सभी अभ्यर्थी मौजूदा सरकार से खार खाए बैठे मिले। सरदार पटेल की मूर्ति हो या शिवा जी की मूर्ति, सबका मानना था कि ये एक फिजूल खर्ची है बिल्कुल उसी तरह जिस प्रकार मायावती के बनाए पार्क एक फिजूल खर्ची थी। इतनी गरीब जनता के बीच में ऐसे महा खर्चीले प्रदर्शनकारी कार्य घोर निंदनीय हैं। जबकि इस राशि को शिक्षा और चिकित्सा पर खर्च किया जाना चाहिए था।

सभी बातों की खामियां गिनाते के बाद 38 वर्षीय प्रकाश के अनुसार मोदी सरकार ने सिर्फ एक काम गलत किया और वो ये कि कट्टरता को स्थापित कर दिया। इसके अलवा मोदी जी ने काफी विकास किया है। विवेक ने सवाल किया कि क्या अच्छा किया, कोई एक ऐसा काम बताओ। प्रकाश के अनुसार सरकार ने इतने हथियार खरीद लिए हैं कि अब चीन और पाकिस्तान भारत से घबराने लगे हैं। मोदी की नीतियों से पाकिस्तान अलग-थलग पड़ गया है समूचे विश्व में। इन सब सूचनाओं का आधार पूछने पर प्रकाश ने कहा आप लोग मुझे अपना नंबर दो मैं अभी वाट्सअप से फारवर्ड करता हूँ। यानी वाट्सअप युनिवर्सिटी का ही स्कॉलर निकला यह भावी प्रशासक ।

बात निकलते निकलते तल्खिओं की गली में घुस गई और इतिहास में जा टिकी जिसपर संक्रांत कुमार ने आरएसएस की देशभक्ति को सबसे ऊँचा बताया। यह भी कि कैसे आरएसएस ने नौजवानों को राष्ट्रवाद सिखाया और विरोधी ताकतों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। 28 वर्षीय दीपिका ने सवाल खडा किया, ये भी बताइए कौन सी विरोधी ताकतों से? तो संक्रांत कुमार ने कहा "मैडम मैं पोलिटिकल साइंस का टीचर हूँ, राष्ट्रवाद की पहली अवधारणा दादा भाई नौरोजी ने दी थी और उसी को आगे बढ़ाते हुए भगत सिंह ने 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' और 'बम का दर्शन' लिखा जिसपर आरएसएस का मूल सिद्धांत टिका है।

दीपिका ने इस सरासर झूठ पर ठहाका लगाते हुए कहा कि मास्टर जी फिलहाल हम ये छोड़ देते हैं कि आपने कितने तथ्य गलत बोले पर क्या राष्ट्रवाद की परिभाषा से पहले कोई राष्ट्रवाद ही नहीं था? और अगर आरएसएस का मूल सिद्धांत भगत सिंह को मानता है तो आज संघ इतना हिन्दू मुस्लिम क्यों कर रहा है? घोर ब्राह्मणवाद से ग्रसित आपकी आरएसएस सिर्फ ब्राह्मणों को ही क्यों अपना प्रमुख चुनती है और उससे भी बढ़ी बात कि आपने भगत सिंह की फांसी के विरोध में कोई काम क्यों नहीं किया? उस समय से आज तक का इस पक्ष पर कोई एक लेख ही दिखा दो आरएसएस का।

राफेल रिश्वत मुद्दे के बचाव में उतरते हुए अभ्यर्थी नितिन पाठक ने सभी तर्कों को धता बताते हुए कहा आप लोगों को क्या पता कि राफेल कितना बढ़िया जहाज है। राफेल से हम बहुत मजबूत हुए हैं और मैं ये कह सकता हूँ क्योंकि मैं नेवी में एक अफसर हूँ। नेवी में अफसर हूँ का उनका खुमार जल्द ही दीपिका, विवेक, और अन्य अभ्यर्थियों की दलीलों ने हवा कर दिया। दीपिका ने कहा कि राफेल की गुणवत्ता पर तो कोई सवाल नहीं उठाया गया है पर हां तीन गुना कीमत और दलाल अम्बानी को आफसेट पार्टनर कैसे चुना उसपर तो बताना पड़ेगा। वहीँ विवेक ने कहा कि अगर इतने ही मजबूत हो रहे हो राफेल ले कर तो 126 की जगह 36 ही क्यों खरीदे वो भी बिना एयर फोर्स की जानकारी के?

किसी दलील का माकूल जवाब न मिलने पर सरकार के पक्षधरों ने ये कहते हुए आत्मसमर्पण किया कि इस देश की जनता ही मूर्ख है जो कभी नहीं सुधरेगी और एक परिवार की गुलाम बने रहना चाहती है। उनके इस समर्पण को अस्वीकार करते हुए अन्य अभ्यर्थी ने कहा कि मोदी को भी तो 5 साल दिए हैं, एक काम बताइए आपके राज में स्वतंत्र हो कर जो किये गए? आज तक हमारी दो-तीन साल पुरानी परीक्षाओं के रिजल्ट नहीं आ पाए और आप कहते हैं कि बिजली आ रही है 24 घंटे।

2 बज गये और सभी परीक्षा हाल में अगले पेपर की अपनी किस्मत अजमाने चले गये। ये देखना दिलचस्प रहा कि जो देश की संस्थाओं को सुदृढ़ करने का संकल्प लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल हो रहे हैं स्वयं उनकी विचारधारा में संवैधानिक मूल्यों की प्रस्तुति कितनी कमजोर है। जिस दिन प्रशासकों की संवैधानिक निर्मिति असल में मजबूत होगी, तो शायद आईपीएस अजीत डोभाल और सेना प्रमुख बिपिन रावत को दिल्ली पुलिस के सिपाही प्रेमपाल की ये बात याद आयेगी कि जो संविधान को नहीं जानता वो क्या खाक देश चलाएगा?

पुलिसकर्मी उतरे गुंडई पर तो हुए सस्पेंड, मुकदमा दर्ज करने की मांग

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 13 अक्टूबर की रात को क्राइम ब्रांच सेक्टर 85 के प्रभारी सब-इन्स्पेक्टर रविंद्र के साथ सेक्टर 29 के शराब ठेके पर राजेन्द्र नामक व्यक्ति और उसके दोस्त देवदत्त से कहा-सुनी हो गयी। दरअसल दोनों ही पक्ष शराब के नशे में पूरी तरह से टुन्न थे। दोनों का ही एक दूसरे से कोई पुराना सम्बन्ध नहीं था, परन्तु जब नशा सिर पर चढा हो तो, कुछ लोग़ों को टक्कर मारने की आदत होती ही है, वे बच कर निकलने की बजाय कहीं न कहीं टक्कर मारते ही हैं। फ़िर रविन्द्र तो थानेदार, वह भी सीधा सब-इन्स्पेक्टर भर्ती हुआ और शीघ्र ही पदोन्नत होकर इन्स्पेक्टर बनने की तैयारी में था। ऐसे में वह कैसे इस टक्कर से बच कर निकलता? कहा-सुनी के दौरान जब राजेन्द्र को पता चला कि वह तो थानेदार से टकरा गया है तो वह वहां से अपनी गाड़ी में दोस्त को लेकर अपने घर बसेलवा कॉलोनी की ओर भागा।

इस बीच रविन्द्र ने फ़ोन करके अपनी सहायतार्थ दो सिपाही सेक्टर 30 क्राइम ब्रांच से बुला लिये थे। अब तीनों पुलिस वालों ने राजेन्द्र का पीछा किया तो उसके घर के निकट उन्हें दबोच लिया और सेक्टर 30 की क्राइम ब्रांच में ले आये, साथ में उसकी कार भी ले गये। यहां लाकर दोनों को बहुत बुरी तरह से मारा-पीटा। पुलिस के नियमानुसार किसी को भी हिरासत में लेकर पीटने के बाद बिना कोई मुकदमा दर्ज किये नहीं छोड़ा जाता। लिहाजा रविन्द्र ने भी सेक्टर 30 में रपट लिखवाने की कोशिश की लेकिन वहां मौजूद पुलिस वालों ने मना कर दिया तो रविन्द्र दोनों को लेकर अपनी चौकी सेक्टर 85 ले गया। लेकिन वहां के कर्मचारियों ने भी रपट दर्ज करने से मना कर दिया। खुद कुछ भी लिखने में असमर्थ थानेदार ने हार कर दोनों को सुबह होते तक राजेन्द्र के घर के निकट फ़ेंका और भाग गया।

उधर राजेन्द्र की पत्नी गरिमा जो अपने पति के लौटने का इन्तज़ार कर रही थी, रात के करीब 12 बजे शोर शराबा सुन कर घर से बाहर गली में आई थी तो लोग़ों ने बताया कि राजेन्द्र को कोई गुंडे उठा कर ले गये हैं और उसकी कार भी ले गये हैं। कार में लगे जीपीएस से पत्नी गरिमा को पता चला कि कार तो सेक्टर 30 की क्राइम ब्रांच में खड़ी है। गरिमा अपने परिजनों के साथ वहां पहुंची तो किसी ने बताया कि यहां तो खाली कार ही है जो उन्हें लावारिस हालत में मिली थी। इतने भर से रविन्द्र थानेदार को समझ आ गयी कि कार में जीपीएस होने के चलते उसे अपने पास रखना खतरनाक है, लिहाज़ा कार को सेक्टर 21 सी में छुड़वा दिया और खुद अपनी चौकी सेक्टर 85 की ओर चला गया।

उधर, सुबह जब घरवालों ने घायल अवस्था में राजेन्द्र को पाया तो उसे सीधे बीके अस्पताल ले जाया गया। उसकी गंभीर अवस्था को देखते हुये डॉक्टरों ने उसे भर्ती कर लिया। राजेन्द्र ने डॉक्टरों व पत्रकारों को बताया कि उसे नंगा करके बुरी तरह से पीटा गया, उसके नाखून उखाड़े गये व टांगों पर रोलर तक फ़ेरा गया। विदित है कि हड्डी टूटने की रिपोर्ट तो एक्सरे से मिल जाती है, परन्तु रोलर फ़ेरने व अन्य गुम चोटों से नष्ट होने वाले टिशूज़ का पता केवल एमआरआई से ही लग सकता है जो आमतौर पर कोई कराता नहीं।

गरिमा की शिकायत पर डीसीपी क्राइम लोकेन्द्र सिंह ने एसीपी यशपाल खटाना को जांच के तुरंत आदेश दिये। एसीपी ने भी एक ही दिन में जांच पूरी करके रविन्द्र व दो अन्य पुलिसकर्मियों को दोषी पाकर सस्पेंड कर दिया है। परन्तु पीड़ित परिवार की मांग है कि इतना भर काफ़ी नहीं है। थानेदार ने जो अपराध किया है उसके लिये आपराधिक मुकदमा दर्ज करके उसे गिरफ़्तार किया जाये। मांग तो वाजिब है और देर-सबेर यह मानी भी जायेगी। क्या ही अच्छा होता यदि विभागीय अधिकारी बिना मांग के ही स्वत: वारदात का संज्ञान लेकर जरूरी कार्यवाही कर देते।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06